पाठ- 8 गांधी जी की हिंसा

प्रस्तावना, आदर्श पठन,

CLASS: IV
SESSION NO : 1
SUBJECT : (HINDI)
CHAPTER NUMBER: 8
TOPIC: गांधी जी की हिंसा
SUB TOPIC: प्रस्तावना,आदर्श पठन, विश्लेषण, शब्दार्थ

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow
गांधी जी की हिंसा

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

चिंतन-मन

मोहन दास करमचंद गांधी, जिन्हें हम राष्ट्रपिता के नाम से जानते हैं। ये सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने बिना अस्त्र-शस्त्र उठाए अंग्रेजों को झुका दिया और भारत को आजादी दिलवाई हमें भी उन्ही की तरह सत्य प्रेम , अहिंसा, दया और क्षमा जैसे गुणों को धारण करते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर संघर्ष करते रहना चाहिए।

एक बार की बात, गए जब
गांधी जी के पास जवाहरलाल।
घड़ी थी रात की,
कुटिया के कोने में नन्हा दीप था।
अँधियारे में दिखी न लाठी पंडित जी
को गांधी जी के हाथ की।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

और पास उनके पहुँचे इस त्वरा में
ये बेचारे लाठी से टकरा गए।
बहुत नहीं, लेकिन थोड़े लड़खड़ाकर
कुछ गुस्से में आए, कुछ घबरा गए।

थोड़े कुछ झल्लाकर बोले- आप तो
प्रेम-अहिंसा के हामी हैं, फिर भला
पाँच हाथ का इतना मोटा लट्ठ
यह रहता है किसलिए बगल ही में डला?"

गांधी जो मुसकरा उठे इस क्रोध पर,
बोले-'तुम्हीं बताओ तुम से ऊधमी
लड़कों की क्या आसपास मरे कमी!
उन्हें ठीक रख सकूँ, इसी के ध्यान से
रखता हूँ में लंबी-मोटी यह छड़ी।“

सुनकर हँसे जवाहर बापू भी हँसे, दमक
उठी दोनों की निर्मल हँसी से अंधकार
से भरी रात की वह घड़ी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

नए शब्द

कुटिया
नन्हा
अधियारे
त्वरा
हामी
लट्ठ
ऊधमी
दमक
निर्मल

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

गृहकार्य

कठिन शब्दों को रेखांकित करें।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

शिक्षण प्रतिफल

महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जी के बारे में जानकर आत्मविश्वास जागृत होगा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP